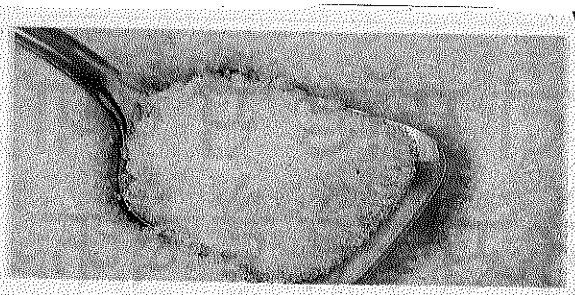

'बनावटी' है चीनी के दाम में आई तेजी

जयश्री भोसले | पुणे |

पिछले 15 दिनों में चीनी के दाम में हुई बढ़ोतरी के बाद महाराष्ट्र के को-ऑपरेटिव बैंकों ने शुगर की वैल्यूएशन बढ़ा दी है। इससे मिलों को किसानों को गन्ने का बकाया चुकाने में मदद मिलेगी। हालांकि, ट्रेडर्स का दावा है कि कीमतों में अचानक आई तेजी आर्टिफिशियल थी। अगर पॉलिसी डिसिजन लेकर इसकी मदद नहीं की गई, तो दाम फिर से कम हो सकते हैं। सरकार के इंपोर्ट ड्यूटी बढ़ाने और मिल लेवल पर चीनी बिक्री की सीमा तय करने के बाद पिछले 15 दिनों में चीनी के दाम में 10-12 पर्सेंट की बढ़ोतरी हुई है। सरकार के इस कदम के बाद देश में चीनी की कीमतों में स्थिरता या मामूली गिरावट आई है। NCDEX पर 16 फरवरी को मुजफ्फरनगर किस्म की चीनी की कीमत 31.45 रुपये प्रति किलो से बढ़कर 35 रुपये प्रति किलो हो गई थी। हालांकि, M30 ग्रेड की चीनी की कीमत 21 फरवरी को वापस गिरकर 34.20 रुपये प्रति किलो रह गई।

कोल्हापुर में फरवरी की शुरुआत में चीनी का दाम 28.40 रुपये प्रति किलो था, जो बुधवार को बढ़कर 32 रुपये प्रति किलो हो गया। शुगर ब्रोकर अभिजीत घोरपड़े ने कहा, 'शुगर प्राइस में आई तेजी कृत्रिम थी, क्योंकि ट्रेडर्स इससे मुनाफा कमाना चाहते थे। केंद्र सरकार ने चीनी मिलों पर सिर्फ दो महीने के लिए होल्डिंग लिमिट लगाई है। इसके बाद कीमतें तब तक सुस्त बनी रह सकती हैं, जब तक चीनी देश से बाहर नहीं जाने लगती है।' हालांकि, क्रिसिल रेटिंग का मानना है कि इंपोर्ट ड्यूटी और स्टॉक लिमिट से कीमतों और मिलों के मुनाफे में सुधार होगा। इससे किसानों को भी गन्ने के बकाये का भुगतान समय से मिलेगा। क्रिसिल के सीनियर डायरेक्टर सुबोध राय ने कहा, 'सरप्लस प्रॉडक्शन की वजह से ग्लोबल शुगर प्राइसेज पहले ही पिछले शुगर सीजन के मुकाबले एक चौथाई कम हो चुके हैं। हालांकि, हमें लगता है कि कस्टम ड्यूटी को बढ़ाकर 100 पर्सेंट करने का फैसला ग्लोबल प्राइसेज में गिरावट आने के बाद चीनी मिलों को 7 रुपये प्रति किलो तक की राहत देगा।' वहीं, 30 सितंबर 2017 तक देश की टॉप 10 शुगर कंपनियों का कर्ज 15 पर्सेंट कम होकर 5,200 करोड़ रुपये रह गया था, जो सितंबर, 2015 में 17,800 करोड़ रुपये था।

The Economic Times.
22-02-18.